भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं.3367

13.03.2020 को उत्तर के लिए

बीहड़ पारिस्थितिकी तंत्र में विदेशी प्रजातियां

3367. श्री डी. एम. कथीर आनन्द :

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को पश्चिमी घाटों सहित देश के बीहड़ पारिस्थितिकी तंत्र में विदेशी प्रजातियों की उपस्थिति के बारे में जानकारी है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है तथा कौन-से क्षेत्र अधिक संवेदनशील हैं;

(ग) क्या सरकार ने विशेष रूप से तमिलनाडु में इन आक्रामक प्रजातियों के कारण वन्य जीवन और वनस्पति के नुकसान का अनुमान लगाया है;

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) सरकार द्वारा इस संबंध में क्या सुधारात्मक उपाए किए गए हैं?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री बाबुल सुप्रियो)

(क) और (ख) कई विदेशी पौधों और जानवरों को भारतीय बीहड़ पारिस्थितिकी तंत्र में प्राचीन काल से विभिन्न रूपों में पहचाना जाता है। कुछ ऐसी प्रजातियाँ जैसे जलकुंभी, जल गोभी, विशालकाय साल्विनिया, नील/लाल तिलपिया, अफ्रीकन कैटफ़िश, कॉमन कॉर्प आदि पश्चिमी घाटों सहित भारत में बीहड़ पारिस्थितिकी तंत्र में कुछ स्थानों की जलीय जैव विविधता को प्रभावित करने के रूप में उभरी हैं।

(ग) और (घ) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने तमिलनाडु सहित देश में आक्रामक प्रजातियों के कारण वन्यजीवों और वनस्पतियों को होने वाले नुकसान का कोई आकलन नहीं किया है।

(ङ) राष्ट्रीय वन्यजीव कार्य योजना (2017-2031) में इस मामले पर विचार किया गया और विदेशी आक्रामक प्रजातियों के प्रबंधन के लिए प्राथमिकता परियोजना को निर्दिष्ट किया है ताकि देशी जैव विविधता को संरक्षित किया जा सके।

****